दर्शन द्वारा अधिगम · Learning from Philosophy) :- दर्शन सफल अधिगम का एक प्रमुख आधार माना जाता है। इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि "सभी संगठित मानवीय क्रिया-शीलताओं का एक विशेष लक्षण तथा अंग होता है और अच्छी तरह विचार की गयी पूर्व योजना की एक सुनिश्चित पृष्ठभूमि होती है। अधिगम प्रक्रिया इसका अपवाद नहीं है। ऐसा पूर्व विचार शिक्षा का दार्शनिक पक्ष (आधार) बनता है। दर्शन मानव चिन्तन का ही दूसरा नाम है। जब अधिगम की प्रक्रिया एवं कार्य सुनियोजित तथा सुविचारित ढंग

से होता है तभी उससे लाभ होता है। ऐसी दशा मे यह आवश्यक है कि अधिगम का आधार दर्शन अथवा चिन्तन हो। अधिगम एक सप्रयोजन प्रक्रिया एवं प्रभाव होता है और शिक्षा देने वाले इसके प्रति सचेत रहते है। इस प्रकार की सप्रयोजनता और सचेतनता के कारण ही दार्शनिक आधार का महत्व माना गया है। अधिगम की परिभाषा, अधिगम की विधियाँ, अधिगम को प्रदान करने वाले तथा स्थल शिक्षा की देखभाल करने वाले तथा राज्य का दृष्टिकोण आदि ऐसी विभिन्न चीजे है जिनका सम्बन्ध दर्शन से अवश्य होता है। अधिगम यदि प्रक्रिया है तो उसमे अन्तर्निहित वह अंश जो प्रक्रिया को बल देता है और सुनिश्चित दिशा मे आगे बढ़ाता है, उसका कारण दर्शन है।

मनोविज्ञान द्वारा अधिगम (Learning from Psychology) :— मनोवैज्ञानिक आधार में सीखने वाले मानव की जैविक विशेषताओ का अध्ययन करते है। अतः इनके अन्तर्गत शारीरिक बौद्धिक तथा सांवेगिक क्रियाओ, विकास तथा इनका प्रभाव व्यवहार पर क्या होता है, का अध्ययन करते है। जैविक आधार के रूप में व्यक्ति, उसकी प्रकृति, रचना, बुद्धि एवं विकास का अध्ययन करना जरूरी होता है। मानव एक विकासशील प्राणी है। ऐसी दशा मे विकास की विभिन्न अवस्थाए होगी, प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताए होगी जिनका सम्बन्ध उसके ज्ञान अनुभव तथा इसकी प्राप्ति के लिए किए गये प्रयास एवं व्यवहारो से होता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र मे दर्शन की ही भाँति विभिन्न सिद्धान्तो एवं सम्प्रदायो

का जो विकास हुआ है, उसका प्रभाव शिक्षा पर हुआ है। मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र आज के युग में व्यक्तिगत ही न होकर सामूहिक भी हो गया है। इसके कारण समूह या सामाजिक विज्ञान का विकास हुआ है। अधिगम भी आज केवल व्यक्तिगत प्रयत्न न होकर सामाजिक एवं प्रक्रिया के रूप में समझी जा रही है, ऐसी दशा में समूह व्यवहार क्रिया-प्रतिक्रिया का सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण के साथ अध्ययन होना अत्यावश्यक है। ये सब इस बात पर जोर देते हैं कि अधिगम का मनोवैज्ञानिक आधार हो। मनोवैज्ञानिक आधार को समझने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत क्या अध्ययन किया जाता है, यह भी जानना जरूरी है। शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षार्थी की आनुवंशिकता, पर्यावरण, उसकी वृद्धि व विकास, व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार, व्यवहार के विभिन्न रूप तथा विकास की दशा में उत्पन्न समस्याओं का समाधान तथा समाधान के साधन उन सबके लिए वैज्ञानिक ढंग से खोज तथा उनको प्रकट करने के लिए सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग आदि बातों का अध्ययन होता है। जिससे शिक्षा की प्रक्रिया व्यक्ति की आनुवंशिक क्षमताओं के अनुकूल सफलतापूर्वक होती है,

समाजशास्त्र द्वारा अधिगम (Learning from Sociology) :—

कुछ समय पूर्व शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार को अधिगम का एकमात्र आधार कहा जाता रहा लेकिन समाज की प्रगति

Scanned with CamScanner

तथा शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया मानने के कारण सामाजिक अथवा समाजशास्त्रीय आधार को अन्य की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ कहा जाने लगा है। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षा की विषयवस्तु एवं शिक्षा की प्रक्रिया को सामाजिक तत्वों एवं सम्बन्धों के सन्दर्भ मे निश्चित करना चाहिए तथा ऐसा करना चाहिए। समाज की संरचना व्यक्तियों के द्वारा होती है। समाज के विभिन्न समूह व्यक्ति बनाते है। इस प्रकार के समूह निर्माण मे जिस किसी प्रकार की शिक्षा दी जाती है वह समूह के द्वारा निश्चित होती है। समाज एवं समूह की अपनी मांग के अनुसार तथा उसे पूरा करने के लिए शिक्षा की प्रक्रिया भी उसी ढंग की होती है। यही सब तथ्य शिक्षा के सामाजिक आधार बनाते है। इसके अनुसार शिक्षाशास्त्र के अन्तर्गत शैक्षिक समाजशास्त्र का अध्ययन करते है।

सामाजिक आधार के अनुसार शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया घोषित करते है अर्थात शिक्षा तथा समाज के समूह में घनिष्ठ मेल होता है। शिक्षा की प्रक्रिया मे समाज की संस्थाए समाज की संस्कृति समाज एवं समूह जीवन के संचित अनुभव की क्रियाशीलताए आदि सभी अपना योगदान करते है। जिसके फलस्वरूप शिक्षा के आदर्श एवं लक्ष्य, मूल्य उद्देश्य, साधन, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम, शिक्षा देने एवं प्राप्त करने वाले सभी प्रभावित होते है।

भाषा द्वारा अधिगम (Learning by Language)

ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक प्राणी की अपनी भाषा होती है लेकिन भाषा सभी प्राणी मनुष्य की भाँति सम्प्रेषण करने मे समर्थ नही होते है। मानवीय भाषा की कुछ निश्चित विशेषताए होती है जो उसकी सम्प्रेषणीयता को निश्चित अर्थ प्रदान करती है। भाषा की सक्षमता से हम भूतकाल वर्तमान तथा भविष्यत काल के विषय में बातचीत कर सकते है। मानव के अस्तित्व के केन्द्र बिन्दु के रूप में भाषा का विकास और उसके वाचिक और अवाचिक दोनो रूपो का प्रयोग सर्वत्र दिखाई देता है। भाषा का कार्य संचित ज्ञान और समुदाय के मूल्यो को ग्रहण करना तथा उनमे परिवर्तन करना होता है। भाषा सम्प्रेषणीयता, चिन्तन तथा अनुभवो के पुनर्गठन का कार्य करती है।

भाषा विकास की विशेषताए —

(i) <u>अर्थवत्ता</u> - भाषा का वह गुण जिसमे शब्दो का प्रयोग वस्तुओ, घटनाओ अथवा विचारो के प्रतीक के रूप मे किया जाता है।

(2) <u>वाक्य विन्यास</u> — सार्थक वाक्य बनाने के लिए शब्दो को उपयुक्त स्थान पर रखने के भाषा के नियम

(3) <u>उत्पादकता</u> — मूल वाक्यो के लिए शब्दो को जोड़कर मूल वाक्य बनाने की क्षमता

Scanned with CamScanner

(4) विस्थापन — भाषा का वह गुण जिससे व्यक्ति वस्तुओं और घटनाओं से सम्बन्धित सूचना को दूसरे स्थान और समय पर सम्प्रेषित करता है। वह विस्थापन कहलाता है। भाषा के द्वारा ही यह सम्भव होता है कि जटिल ज्ञान के विशाल भण्डार को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सक्षमता से सम्प्रेषित किया जा सके तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जा सके।

Scanned with CamScanner